जो व्यक्ति सात्विक, पवित्र, दिव्यगुण सम्पन्न, आत्म-निष्ठ तथा प्रभु-आश्रित होते हैं और अपना सर्वस्व जनहित में लगा देते हैं, उनके प्रकम्पन विशेष होते हैं। वे सम्पर्क अथवा संसर्ग में आने वाले व्यक्ति को भी सात्विकता, पवित्रता, सद्भावना, सद्व्यवहार और सदाचार की ओर मोड़ देते हैं। वे कुछ ऐसा शक्तिशाली परंतु अच्छा लगने वाला, मन को सुहाना और सुमधुर भाषित होने वाला प्रभाव डालते हैं कि व्यक्ति की अंत:चेतना जाग जाती है। बुराई के लिए उसका मन प्रायश्चित करता है और उनमें शुद्ध एवं शुभ संकल्पों का अभ्युदय होता है। उनके प्रभामंडल अथवा प्रकम्पनों के इस प्रभाव को सकाश कहते हैं, जिनकी योग में ऊंची गति और ऊंची स्थिति होती है वे अपनी वृत्ति, दृष्टि, स्थिति आदि से दूसरों की सेवा करते रहते हैं। स्थूल रुप से वे मुख से बोलते, नेत्रों से देखते, हाथों से प्रसाद देते अथवा आशीर्वाद देते हैं। परन्तु सूक्ष्म रुप से उनका सकाश काम कर रहा होता है। वे इच्छाओं और तृष्णाओं से ऊंचे उठ चुके होते हैं और सदा प्रसन्नचित्त, प्राप्त-काम्य (जिनकी अब लौकिक

जिनकी योग में ऊंची गति और ऊंची स्थिति होती है वे अपनी वृत्ति, दृष्टि, स्थिति आदि से दूसरों की सेवा करते रहते हैं। सूक्ष्म रुप से उनका सकाश काम कर रहा होता है। वे इच्छाओं और तृष्णाओं से ऊंचे उठ चुके होते हैं और सदा प्रसन्नचित्त, प्राप्त-काम्य (जिनकी अब लौकिक प्राप्ति की कोई कामना न हो) स्थिति में स्थित होते हैं। वे सभी के शुभ-चिंतक, सभी के सुहृदय और सबके प्रति करुणाशील होते हैं।

प्राप्ति की कोई कामना न हो) स्थिति में स्थित होते हैं। वे सभी के शुभ-चिंतक, सभी के सुहृदय और सबके प्रति करुणाशील होते हैं। उनका मन घृणा, द्वेष, ईर्ष्या इत्यादि सभी प्रकार की धूल-मिट्टी से सुरक्षित एवं साफ होता है। वे निर्मल, निश्चिंत और निष्काम होते हैं। ऐसे व्यक्ति से यदि भेंट हो जाए, बात का अवसर यदि मिल जाए, उनसे कुछ सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो जाए, उनसे प्रसाद रुप में कुछ मिल जाए, कुछ पत्र-पुष्प का आदान-प्रदान हो, उनकी नजर अथवा ध्यान हम पर पड़ जाए तो इस विधि भी उनका सकाश हमारे जीवन को आलोकित, आनंदित एवं उत्साहित कर देता है। वे व्यक्ति दुर्भाग्यशाली होते हैं जो ऐसे महानुभावों से सकाश लेने की बजाय उनकी अवज्ञा अथवा अवहेलना, उनका निरादर करते हैं या उनसे भी मनमुटाव रखते हैं।

जैसे सूर्य स्वभाव से ही प्रकाश और गर्मी के प्रकम्पन चहुँ ओर भेदभाव रहित होकर देता रहता है जिससे कि ये जगत बना रहता है और यहां के कीटाणु तथा वायुमण्डल का प्रदूषण छिन्न-भिन्न एवं नष्ट हो जाता है। वैसे ही महान योगी अपनी पवित्रता, शांति, सात्विकता, शीतलता, शक्ति इत्यादि के प्रकम्पन चहुँ ओर प्रकीर्ण करता रहता है। सूर्य की किरणें बहुत दूर-दूर भी अपना प्रभाव डालती हैं। ऐसे ही जिसके योग की दिव्यता पराकाष्ठा पर हो वो आध्यात्मिकता एवं दिव्यता की उतनी तेज अथवा शक्तिशाली किरणें भेजता रहता है। उसका संकल्प भी दूरस्थ व्यक्ति के पास पहुंचकर सेवा करता है। उसकी विचार तरंगें कहीं दूर अति दूर बैठे हुए व्यक्ति के मन को भी स्पर्श करती हैं। इसे मंसा सेवा अथवा मानसिक मौन द्वारा सेवा कहा जाता है। ये वाणी से भी परे की अवस्था है और बहुत ही शक्तिशाली अथवा प्रभावशाली होती है परंतु इस स्थिति को प्राप्त होने के लिए अर्थात् सूर्य समान ज्योतिर्मय, तेजोमय, शक्तिमय एवं ज्वालामय होने के लिए बहुत सूक्ष्म पुरूषार्थ की आवश्यकता है। इसी का नाम साधना है। यही योग की पराकाष्ठा है। इस भूमिका को प्राप्त होने के लिए जो पुरुषार्थ करना पड़ता है उसका संक्षेप, सार यह है -

पवित्रता में निर्विघ्न रहना -सात्विक आहार-व्यवहार, विचार से नीचे न उतरना। कोई व्यक्ति चाहे हमें कितना भी हिलाये, भड़काये अथवा अपनी बुराईयों से सताये परंतु अपनी पवित्रता के सिंहासन में जमे रहना। मन में कोई भी क्षुद्र भाव न आये, दूसरों की बुराई को देखकर बुरी प्रतिक्रिया न हो बल्कि अपनी पवित्रता अखंड और अमोघ बनी रहे। कष्टों को झेलते हुए भी पैसे का प्रलोभन, सौंदर्य का आकर्षण, स्वाद के प्रति खिंचाव, सुख-सुविधा की तृष्णा, अनावश्यक

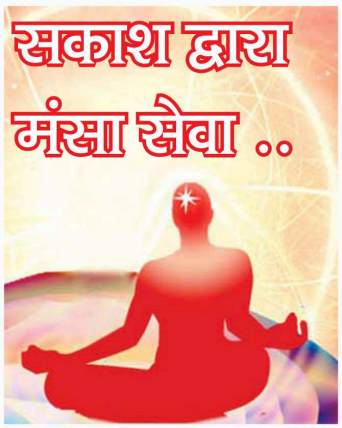

संग्रह की प्रवृत्ति, मान-शान की इच्छा, मेरे-तेरे के संकुचित भाव, स्वार्थ की लहर न आये।

देह से न्यारा होकर रहने का अभ्यास - विदेह स्थिति अथवा अव्यक्त भाव दिनों-दिन बढ़ता चले। मैं लाईट हूं, माईट हूं, परमधाम का वासी हूं। इस संसार का एक यात्री हूं। अब यात्रा पूरी कर जाने वाला हूं, मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। प्रभु की मुझ पर अपार कृपा है। इस प्रकार के विचार मन में प्रवाहित होते रहें। इस कलियुगी संसार के प्रति न लगाव हो, न झुकाव हो बल्कि वैराग्य हो और मन में सदा यह संकल्प चलता रहे कि ये दुनिया तो माया नगरी है, पराया देश है, ये रौरव नर्क है, मलेच्छिस्तान है और मुझे तो निर्वाणधाम जाना है। इस प्रकार की विचार तरंगें उठती रहें। यह संसार प्रकृति और पुरूष का खेल है। मैं प्रकृति के तूफानों से अथवा जाल से अब निकल चुका और अब अपने गंतव्य अथवा लक्ष्य की ओर बढ़ता चलूंगा और मोहिनी माया की चालों को समझ चुका। अब मैं योगी अथवा हंस की चाल चलता हुआ एक भगवान ही की सर्वश्रेष्ठ मत के अनुसार चल रहा हूं और चलता रहूंगा और वह देखो, उस प्रकाश-पर्वत के शिखर पर मेरा अचल-अडोल सिंहासन है, जहां से प्रकृति और माया मुझे हिला नहीं सकती, इस प्रकार के भावों में स्थिर रहें।

ये संसार एक बना-बनाया ड्रामा है - इस संसार में हरेक का अपना-अपना पार्ट है। किसी एक का पार्ट भी किसी दूसरे के समान नहीं है। हर कोई अपने कर्मों अथवा अपनी प्रालब्ध के अनुसार भोग रहा है। किसी से ईर्ष्या, द्वेष या घृणा करना व्यर्थ है और अपने ही अभिमान का और अपनी अतृप्त इच्छाओं को पूरा करने का निकृष्ट प्रयास है बल्कि मुझे तो लगता है कि ये ड्रामा बहुत अद्भुत है। ये बेमिसाल है। हरेक में अपना-अपना गुण है, अपनी-अपनी विशेषता है। ये संसार रूपी ड्रामा ठीक है और बहुत राजयुक्त है। इसकी निंदा अथवा इससे घृणा करना इसके बारे में अज्ञानता है और अपने ही मन में हलचल पैदा करने का गलत प्रयत्न है। ऐसा सोचना ही सबके प्रति सद्भाव बनाये रखने का तरीका है।

घृणा की बजाय करुणा अथवा दया अथवा सहानुभूति अथवा सहयोग की भावना अथवा सेवा का भाव पैदा होना ही योग का लक्षण है। जो ऐसा योगी है उसी का योग ही सात्विक सकाश देने की क्षमता रखता है।

परमपिता परमात्मा तो सबको सकाश देते ही हैं। सहयोगीजन भी भेदभाव के बिना सबको सकाश देते हैं परंतु जिनमें ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, वैर-विरोध, मनोविकार प्रबल हैं उन्होंने ऐसे बड़े पत्थरों की ओट में अपने को छिपा रखा है कि वे सकाश नहीं लेते। जब प्रथम एटम बम का विस्फोट किया गया था, तो दूर खड़े वैज्ञानिकों ने स्वयं को ऐसी ओट में लिया हुआ था कि जिससे उन पर रेडियेशन का प्रभाव न पड़े। एटम बम के विस्फोट से इतनी प्रबल शक्ति प्रकीर्ण हुई कि जिसका प्रकाश कई सूर्यों से भी तेज था और जिससे समुद्र का पानी भी उबलने लगा और जमीन में कितना बड़ा गर्त हो गया और कितनी तेज आंधी आई तथा कितना तेज धमाका हुआ परंतु वैज्ञानिकों ने ऐसे साधनों अथवा उपकरणों का प्रयोग कर रखा था कि जिससे वे अणु बम के विस्फोट के भयानक परिणामों से बचे रहे। ऐसे ही मनुष्य ने माया का एक बहुत मजबूत आवरण ओढ़ रखा है। स्वयं को नकारात्मक भावों से घेर रखा है। अपने मन में इतनी निकृष्ट सामग्री एकत्रित कर रखी है कि जो उस पर न ईश्वरीयता के सकाश का प्रभाव पड़ने देती है, न योगीजनों के प्रकम्पनों रूपी सकाश का लाभ लेने देती है। मनुष्य इतना दुर्भाग्यशाली और बेसमझ है कि समझाने पर भी मानता नहीं और मानने पर भी तदानुसार चलता नहीं और चलने पर भी लंगड़ा-लंगड़ा कर गिरता-पड़ता है। वास्तव में चाहिए तो ये कि वो इन प्रकम्पनों से न केवल लाभान्वित हो बल्कि स्वयं भी ऐसी सकाश देने लग जाए। जब इस संसार में 16,108 ऐसे व्यक्ति हो जाएंगे जो ऐसी सकाश देने वाले हों और नौ लाख ऐसे व्यक्ति हों जो स्व-स्थिति अनुसार ऐसा सात्विक सकाश दें तब दैवी दुनिया सतयुग के स्वर्णिम द्वार खुलेंगे।

है कोई ऐसा अपना तथा संसार का शुभचिंतक जो आज ही इस संकल्प को दृढ़ करे कि मैं ऐसा सकाश देने योग्य योगी बनकर सतयुग लाने के ईश्वरीय कार्य में निमित्त सहयोगी बनूंगा? है कोई ऐसा ईश्वर का लाल जो ये ठान ले कि मैं अपने ऊपर चढ़ी माया की मोटी-मोटी फौलादी परतें तोड़ दूंगा और उससे बाहर निकलकर ईश्वरीय सकाश में तथा महायोगीजन के सकाश में आकर निर्मल, निश्चिंत, निरद्वंद, नि:स्वार्थ, निर्विकार, निरहंकार और निराकार बन जाऊंगा?

-ब्र.कु.जगदीशचन्द्र हसीजा

दिल्ली (पाण्डव भवन)। पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए.पी.जे.अब्दुल कलाम को रक्षाबंधन का आध्यात्मिक मर्म बताते हुए ब्र.कु.आशा।

चेन्नई। तमिलनाडु के राज्यपाल महामहिम डॉ.के.रोसई को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ईश्वरीय वरदान देते हुए ब्र.कु.बीना साथ हैं ब्र.कु.कलावती व ब्र.कु.देवी।

चण्डीगढ़। पंजाब व हरियाणा के राज्यपाल महामहिम शिवराज पाटिल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.अचल साथ हैं ब्र.कु.अमीरचंद।

गुवाहाटी। असम के राज्यपाल महामहिम जे.बी.पटनायक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.शीला।

हैदराबाद। आंध्रप्रदेश के राज्यपाल महामहिम ईएसएल नरसिम्हा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कुलदीप।

रायपुर। छ.ग. के राज्यपाल महामहिम शेखर दत्त को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सविता।

पणजी। गोवा के राज्यपाल महामहिम भारतवीर वांचु को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.शोभा तथा ब्र.कु.सुरेखा।